# सेंट एंड्रयूज़ स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

**9वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – 110092**

**सत्र: 2026-2027**

**कक्षा- दसवीं** **विषय- हिन्दी** **कार्यपत्रिका-1**

**सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।**
**दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।**
**बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ।**
**राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ ॥**

**1. कबीर की साखियों में प्रयुक्त भाषा को किस नाम से जाना जाता है?**

(क) अवधी और पंचमेल खिचड़ी (ख) मिश्रित भाषा
(ग) सधुक्कड़ी और पंचमेल खिचड़ी (घ) सदाबहार भाषा

**2. कबीर के अनुसार सुखी कौन है?**

(क) सांसारिक लोग जो खाते और सोते हैं (ख) आध्यात्मिक लोग
(ग) लालची लोग (घ) सांसारिक लोग जो खाते हैं

**3. कबीर के अनुसार दुखी कौन होता है?**

(क) आध्यात्मिक लोग (ख) लालची लोग
(ग) जो परम सत्य को जान जाता है (घ) जो अल्पबुद्धि अथवा अज्ञानी है

**4. 'बिरह भुवंगम' में उपमेय और उपमान क्या है?**

(क) उपमेय विरह, उपमान भुवंगम (ख) उपमेय भुवंगम, उपमान विरह
(ग) उपमेय भुवंगम, उपमान विष (घ) उपमेय डसना, उपमान पीड़ा

**5. दूसरे दोहे का विषय क्या है?**

(क) साँप के डसने से बौरा जाना (ख) राम के वियोग में सीता की दशा
(ग) साँप के डसने की पीड़ा (घ) ईश्वर के वियोग में मनुष्य की करुण दशा

**6. प्रस्तुत साखी में 'मैं' से कबीर का क्या तात्पर्य है?**

(क) अपनी आत्मा (ख) अपना शरीर (ग) अपना अहंकार (घ) अपनी भनि

**7. 'जब मैं था तब हरि नहीं' प्रस्तुत पंक्ति का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।**

(क) जब मैं स्वयं को बुद्धिमान समझता था, तो ईश्वर नहीं मिले।
(ख) जब मैं स्वयं को ईश्वर समझता था, तो ईश्वर मुझे नहीं मिले।
(ग) जब तक मेरे अंदर लोगों के प्रति दुर्भावना विद्यमान थी, तब तक ईश्वर मुझसे दूर थे।
(घ) जब तक मेरे अंदर अहंकार व्याप्त था, तब तक ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाया।

**8.** ईश्वर के विरह में वियोगी की क्या स्थिति हो जाती है? साखी के आधार पर व्यष्ट कीजिए।

**9.** कबीर के अनुसार निंदक के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए? एक निंदक हमारी मदद कैसे कर सकता है?

**10.** कबीर ने स्वयं को दुखिया और सारे संसार को सुखिया क्यों कहा है?